

## मुद्रा संस्कृति और आधुनिक दुनिया

### शुरुआती हपी कितारे

- प्रिंट टेक्नालॉजी का विकास पहले पहले चीन, जापान और कोरिया में हुआ।  
चीन में प्रिंटिंग :-
- 594 ई. में चीन में श्याही लगे काठ के ब्लॉक या तख्ती पर कागज को रगड़कर कितारे छपी जाने लगे थे।
- चूंकि पहले, द्विहित कागज के दोनों तरफ छपाई संभव नहीं थी, इसलिए पारंपरिक चीनी कितारे स्कॉटिश, रोमी में, किनारे को मोड़ने के बाद सिल कर बनाई जाती थी।
- कितारे का मुद्रण या प्रबलन करने वाले लोग यंत्र मुद्रक या प्रचर होते थे, जो हाथ से बड़े सुन्दर - सुंदर अक्षरों में सही - सही कलात्मक लिखाई करते थे।
- सिविल सेवा परीक्षा से नियुक्त चीन की नौकरबाही भी विद्यालय थी, तो चीनी राजतन्त्र इन परीक्षाओं के लिए बड़ी तादाद में कितारे छपाता था।
- सोलहवीं शती में परीक्षा देने वालों की तादाद बढ़ी, लिहाजा, हपी कितारे की माता भी उसी अनुपात में बढ़ गई।



- 188]
- व्यापारी अपने राजमर्ग के कारोबार को जानकारी लेने के लिए मुद्रित सामग्री का इस्तेमाल करने लगे।
  - पश्चिमी शैली के श्रवणों की जरूरतों को पूरा करने वाले शंघाई प्रिंट-संस्कृति का नया केन्द्र बन गया।
- जापान में मुद्रण :-

- प्रिंट टेक्नॉलॉजी को **बौद्ध धर्म के प्रचारकों** ने 768 से 770 इसवी के आस-पास जापान लाया।
- बौद्ध धर्म की किताब जयमंड मूल जो **868 इसवी** में दृष्टि थी, को जापानी भाषा की सबसे पुरानी किताब माना जाता है।

यूरोप में मुद्रण का आना :-

- मिलक भट के माध्यम से **ग्याहरवी** शताब्दी में चीनी कागज यूरोप पहुँचा।
- **1295** में **मार्को पोलो** चीन से मुद्रण का ज्ञान लेकर इटली आया।
- इतालवी भी तबली की दृष्टि से कितने निकायने लगे और जल्द ही यह तकनीक बाकी यूरोप में फैल गई।
- फिताली की आँख बढ़ने के साथ-साथ यूरोप-भर के पुस्तक-विक्रेता विभिन्न देशों में निर्यात करने लगे।



• हस्तलिखित पांडुलिपियों के माध्यम से  
पुरतकों की भारी मांग को पूरा कर  
पाना असंभव था।

• किताबों को बहती मांग को पूरा करने  
के लिए अब पुरतक विक्रेता अनिवार्य  
या कारिग को रोजगार देने लगे।

• पंद्रहवीं सदी की शुरुआत तक यूरोप में  
लेड पैमाने पर तख्ती की द्वाड़ का  
इस्तेमाल करके कपड़े तथा के फने  
और दोरी-दोरी टिप्पणियों के साथ  
धार्मिक चित्र द्रापे जा रहे थे।

• किताबें द्रापने के लिए इससे भी तेज  
और भारी मुद्रण तकनीक की  
जरूरत थी।

यूरोप में मुद्रण संस्कृति के उदय में सहायक कारक-

• हस्तलिखित पांडुलिपियाँ पुरतकों को बहती मांग  
को पूरा नहीं कर सकीं।

• नकल करना एक संदगा, त्रमसाध्य और  
समय लेने वाला काम था।

• पांडुलिपियाँ नाजुक थी इसलिए उनका प्रचलन  
संमित था।

• 15वीं सदी के प्रारंभ में मुद्रण के लिए  
लकड़ी के ब्लॉक का उपयोग किया जाने लगा,  
लेकिन इससे मुद्रण सामग्री की बहती मांग  
को पूरा नहीं किया जा सका।

• पुरतकों के शीघ्र एवं सस्ते पुनरुत्पादन की आवश्यकता



## गुटेनबर्ग का प्रिंटिंग प्रेस

### यौहान गुटेनबर्ग :-

- यौहान गुटेनबर्ग के पिता आपसी थे और वह येली को रुक लड़ी रियासत में पस बढकर लडा हुआ ।
- वह लचपन से ही तेल और जैतून पेरने की मशीनें देखना आया था ।
- लड में उसने पहाट पर पाँचिवा करने की कला सीखी, फिर सुनारी और अंत उसने शीशे की इच्छित आकृतियों में गहने में आहारत दक्षिण कर ली ।

### प्रिंटिंग प्रेस :-

- जैतून प्रेस ही प्रिंटिंग प्रेस का आदर्श बनी और सोने का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गहने के लिए किया गया ।
- गुटेनबर्ग ने 1448 तक अपना यह थान मुकम्मल कर लिया और इससे पहले जो पुरतक हरी वह था नाइबिल ।
- शुरु - शुरु में तो हरी किताबें भी अपने रंग - रूप और साज - सजा में हरतमिखित पांडुलिपियों जैसी दिखती थी ।
- करीब सा सालों के श्रमधान (1450-1550) यूरोप के व्यापार देशों में दौरे लगे गए थे ।

### लार्डेन :-

- लैटरप्रस हार्डि में लार्डेन रुक लोड होता है, जिसे कागज के पीछे दबाकर हाइप की



हाथ ली जाती थी। पहले यह बोर्ड काठ का होता था, बाद में इस्पात का बनने लगा।

मुद्रण क्रांति और उसका असर :-

नया पाठक वर्ग :-

- होपस्थानों के आने से एक नया पाठक वर्ग पैदा हुआ।
- किताब की दर प्रति के उत्पादन में जो वक़्त और श्रम लगता था, वह कम हो गया, और बड़ी तादाद में प्रतियाँ छापना आसान हो गया।
- द्वापई से किताबों की कीमत घिरी। बाजार किताबों से घट गई, पाठक वर्ग भी बृहत् होता गया।
- मुद्रण क्रांति के कारण पहले जो जनता श्रमिक था वह अब पाठक में बदल गई।
- अब किताबें समाज के आपको तबकों तक पहुँच चुकी थीं।

धार्मिक विवाद एवं प्रिंट का डर :-

- अधिकांश लोगों को यह भय था कि अगर मुद्रण पर नियंत्रण नहीं किया गया तो विश्रुती एवं अधार्मिक विचार पनपने लगेंगे।
- धर्म-अध्यापक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिछाने स्थापनाएँ लिखीं।



• न्यू टेस्टामेंट के बुचर के तर्जुमे के आधार पर चर्च में विभाजन हो गया और **प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार** की शुरुआत हुई।

• धर्म-विरोधी विचारों को ध्वाने के लिए रोमन चर्च ने **इन्कीजीशन** (धर्म-द्रोहियों को दुकस्त करने वाली संस्था) शुरू किया।

• धर्म के पास ऐसे पाठ और उस पर उठाने जा रहे सवालों से परेशान रोमन चर्च ने प्रकाराकी और पुरस्कृत-विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाई, और 1558 ई. से प्रतिलिखित किताबों को सूची रखने लगे।  
पढ़ने का जुनून :-

• सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में यूरोप में साक्षरता के स्तर में काफी सुधार हुआ।

• अलग-अलग संप्रदाय के चर्चों ने गाँवों में स्कूल स्थापित किए और किसानों-कारिगरों को शिक्षित करने लगे।

• अठारहवीं सदी के अंत तक यूरोप के कुछ हिस्सों में तो साक्षरता दर 60 से 80 प्रतिशत तक हो गई थी।

• यूरोपीय देशों में साक्षरता और स्कूलों के प्रसार के साथ लोगों में पढ़ने का जैसे जुनून पैदा हो गया।



पत्रिकाएँ, उपन्यास, पंचांग आदि सबसे ज्यादा  
बिकने वाली किताबें थीं।

पुस्तक विक्रेताओं ने गाँव-गाँव जाकर होती-  
होती किताबें बेचने वाले फेरीवालों को  
काम पर लगाया।

इंग्लैंड में मेनो जैपलुक्स था स्कैपेसिया किताबें  
बेचने वालों को जैप्सेन कहा जाता था।

फ्रांस में बिब्लियोथीक ब्लू का चलन था।  
जो सफेद कागज पर हरी और नीली  
जिल्द में लंबी होती किताबें हुआ  
करती थीं।

अखबार और पत्रों में युद्ध और व्यापार  
से जुड़ी जानकारी के अलावा दूर देशों  
की खबरें होती थीं।

### मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी क्रांति :-

कई इतिहासकारों का मानना है कि प्रिंट  
संस्कृति ने ऐसा साहस बनाया जिसके  
कारण फ्रांसीसी क्रांति की शुरुआत हुई।  
इनमें से कुछ कारण निम्नलिखित हैं :-

हफर्ड के चलते विचारों का प्रसार,  
उन्के लेखन ने परंपरा, अविश्वास और  
निरंकुशवाद की आलोचना की।

सीट रिवाजों को जगह विवेक के शासन  
पर जल दिया।

चर्च की धार्मिक और राज्य की निरंकुश  
सत्ता पर हमला।



- हाफि ने बाद विवाद को नई संस्कृति को जन्म दिया ।
- बच्चे , महिलाएँ और मजदूर :-

- उन्नीसवीं सदी में यूरोप में साक्षरता में जबरदस्त उदाल आया । इससे पाठकों का रुक ऐसा बना वर्ग उभरा जिसमें बच्चे , महिलाएँ और मजदूर शामिल थे ।

### बच्चे के लिए :-

- उन्नीसवीं सदी के आखिर में प्राथमिक शिक्षा के अनिवार्य होने के चलने बच्चे , पाठकों को एक अहम श्रेणी बन गए ।
- फ्रांस में 1857 में सिर्फ बाल पुस्तकें हाफने के लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया ।
- इस प्रेस में पुरानी और नयी , दोनों तरह की पूरी कथाओं और लोक कथाओं का प्रकाशन किया गया ।
- जर्मनी के ग्रिम गंधुओं ने बरसों लगाकर किसानों के सिंच बीच से लोक कथाएँ जमा की ।
- बच्चों के लिए अनुपयुक्त भाषा , या जो जीने कुछीन वर्गों को अवगत लगती थी उन्हें प्रकाशित संस्करण में शामिल नहीं किया जाता था ।



## महिलाओं के लिए :-

[95]

- महिलाएँ पाठिका और लेखिका की भूमिका में ज्यादा अहम हो गईं।
- वेनी मैगजीस या स्कूलेसिया पत्रिकाएँ खास तौर पर उन्हीं के लिए होती थी, जैसे ही जैसे कि सही चाल-चलन और गृहस्थी सिखाने वाली निर्देशिकाएँ।
- उन्नीसवीं सदी में जब उपन्यास होने लगे तो महिलाएँ उनका अहम पाठक मानी गईं। मशहूर उपन्यासकारों में लेखिकाएँ अग्रणी थी, जेन ऑस्टिन, फ्रांसेस ब्रॉन्ट ब्रदर, जॉर्ज इलियट, आदि।
- उनके लेखक से नयी नरि की परिभाषा उभरी: जिसका व्यक्तित्व सुदृढ़ था, जिसमें गहरी सूझ-बूझ थी, और जिसका अपना दिमाग था, अपनी इच्छाशक्ति थी।

## मजदूरों के लिए :-

- सत्रहवीं सदी से ही किराए पर किताब देने वाले पुस्तकालय अस्तित्व में आ गए थे।
- उन्नीसवीं सदी के इंग्लैंड में ऐसे पुस्तकालयों का उपयोग अफेद - कॉपर मजदूरों, दलितों और निम्नवर्गीय लोगों को शिक्षित करने के लिए किया गया।
- काम के दिन के दौरे होने के बाद मजदूरों को अपने सुधार और आत्म-अभिभाविक के लिए थोड़ा प्रयास मिलने लगा।



उन्होंने लक्ष संख्या में राजनीतिक पत्रों और आत्मकथाएँ लिखीं।

प्रिंट तकनीक में अन्य सुधार :-

- अठारहवीं सदी के अन्त तक प्रेस धातु से बनने लगे थे। पूरी उन्नीसवीं सदी के दौरान क्षेपणाने की तकनीक में लगातार सुधार हुए।
- न्यूयॉर्क के रिचर्ड एम. हो ने उन्नीसवीं सदी के मध्य तक शक्ति से चलने वाला बेसनाकार प्रेस बना लिया था। इस प्रेस से एक घंटे में 8,000 पेज छापे जा सकते थे।
- उन्नीसवीं सदी के तक ऑफसेट प्रेस आ गया था, जिससे एक साथ 64 रंगों की छपाई मुमकिन थी।
- बीसवीं सदी के आते ही बिजली से चलने वाले प्रेस भी इस्तेमाल में आने लगे। इससे छपाई के काम में तेजी आ गई।
- इसके अलावा प्रिंट को टेक्नॉलोजी में कई अन्य सुधार भी हुए। इस तरह कई दोली-दोली मशीनें इकाइयों में कुल सुधार की लक्ष्यता दी हुई होने का रंग-रूप ही बखल गया।



## भारत का मुद्रण संसार :-

- भारत में संस्कृत, अरबी, फारसी और विभिन्न ब्रह्मीय भाषाओं में दूर-दूर तक लिखित पांडुलिपियों की पुरानी और समृद्ध परंपरा थी।
- पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या दाय से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थीं। उनकी उम्र बढ़ाने के लिए विचार दिए जाते थे।
- पूर्व औपनिवेशिक काल में बंगाल में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक पाठशालाओं का बड़ा जाल था, लेकिन विद्यार्थी आमतौर पर किताबें नहीं पढ़ते थे।
- बुरुआ अपनी याददाश्त में किताबें सुनाते थे, और विद्यार्थी उन्हें लिख लेते थे। इस तरह कोई भी साक्षर बन जाते थे।

### पांडुलिपियाँ :-

- दायों से लिखी पुरानों को पांडुलिपियाँ कहते थे।

### इनके प्रयोग की सीमाएं :-

- किताबों की बढ़ती मांग, पांडुलिपियों से पूरी नहीं होनी वाली थी।
- नकल उतारना बेहद खर्चीला, समय अधिक लगाना, मांग पूरी ना होना।



58 ये बहुत नाजुक होती थी। रखरखाव में लाने ले जाने में मुश्किल आती थी।

उपरोक्त समस्याओं को लन्दन से उनका आदान प्रदान मुश्किल था।

### मुद्रण संस्कृति का भारत आना

प्रिंटिंग प्रेस पहले-पहल मेलबोर्न की सदी में भारत के गोवा में पुर्तगाली धर्म प्रचारक के साथ आया।

1674 ई. तक कोकणी एवं कन्नड़ भाषाओं में लगभग 50 पुस्तकें हाथी जा चुकी थी।

कैथोलिक पुजारियों ने 1579 में कोचीन में पहली तमिल किताब हाथी और 1713 में उन्होंने ही पहली मलयालम पुस्तक हाथी।

जेम्स ऑगस्टस दिवकी ने 1780 से बंगाल गजट नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन आरम्भ किया।

गंगाधर भट्टाचार्य ने बंगाल गजट का प्रकाशन आरम्भ किया।

### धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसे :-

प्रिंट संस्कृति से भारत में धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दों पर बहस शुरू करने में मदद मिली। लोग कई धार्मिक रिवाजों के प्रचलन को आलोचना करने लगे।



थह वह समय था जब समाज और धर्म सुधारकों तथा हिन्दू कविवादियों के बीच विधवा - शाह, शंकरेश्वरदास, ब्राह्मण पुनर्निर्माण और मूर्ति - पूजा जैसे मुद्दों को लेकर तेज लड़न ठनी हुई थी ।

बंगाल में जैसे बहस चली लगातार बढ़ती तादात में पुस्तिकाओं और अखबारों के जरूर तरद - तरद के समाज के बीच आने लगे ।

1821 से राममोहन राय ने अवार्ड कौमुदी प्रकाशित करना शुरू किया । इस पत्रिका में हिन्दू धर्म के कविवादी विचारों की आलोचना होती थी । ऐसी आलोचना को काटने के लिए हिन्दू कविवादियों ने समाचार पत्रिका नामक पत्रिका निकालना शुरू किया ।

दो फारसी अखबार - जाम - ए - जहाँ नामा और सम्मुख अखबार भी 1882 में प्रकाशित हुए ।

सन 1867 में स्थापित देवलाल देबेनरी ने मुसलमान पाठकों को रोजमर्रा का जीवन जीने का तरीका और इस्लामी सिद्धांतों के मायने समझाते हुए हजारों फतवे जारी किए ।

तुलसीदास की सोलहवीं सदी की किताब रामचरितमानस का पहला मुद्रित संस्करण 1810 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।

लखनऊ के नवल मिश्र प्रेस और बंबई के लंकेश्वर प्रेस में अनेक भारतीय भाषाओं



में अनभिन्न वार्षिक फिदावे दही।

## पिंठ और महिलाएँ :-

- जेन ऑस्टिन, वाण्ट लहने, जार्ज इवियर आदि के लेखन से नयी नारी की परिभाषा उभरी जिसका अस्तित्व सुदृढ़ था, जिसमें जहरी भुझ बुझ थी, और जिसका अपना दिमाग था, अपनी इच्छाशक्ति थी।
- महिलाओं की जिंदगी और उनकी भावनाएँ लड़ी माफगोई और सहनता से लिखी जाने लगी। इससे सहायकीय धर्मों में महिलाओं का पहना भी पहले से बहुत ज्यादा हो गया।
- उदारवादी पिता और पति अपने यहाँ औरतों को धर पर पहने लगे, और उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब बड़े-छोटे शहरों में स्कूल बने तो उन्हें स्कूल भेजने लगे।
- 1876 में खामुंदरी देवी की आत्मकथा आमार जीवन प्रकाशित हुई।
- 1880 में ताराबाई शिंदे और पंडित रमाबाई ने उच्च जाति की नारियों को दयनीय हालत पर रोष जाहिर किया।
- राम चहा ने औरतों को आज्ञाकारी वीवियाँ बनने की सीख देने के उद्देश्य से अपनी बेस्ट सेलिंग पुस्तक म्लो धर्म विचार लिखी।
- 1871 में ज्योतिबा फुले ने अपनी पुस्तक शुलामणि में जाति प्रथा के अत्याचारों पर लिखा।



## पिंट और गरीब जनता :-

[101]

- मद्रास के शहरों में उन्नीसवीं सदी में अपनी और दोरी किताबें आ चुकी थी। इन किताबों को चौराहों पर बेचा जाता था ताकि गरीब लोग भी उन्हें खरीद सकें।
- बीसवीं सदी के शुरुआत में सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना शुरू हुई। इन पुस्तकालयों के कारण लोगों तक किताबों की पहुँच बढ़ने लगी।
- उन्नीसवीं सदी के अंत से जाति-भेद के बारे में तरह-तरह की पुस्तिकाओं और निबंधों में लिखा जाने लगा था।
- निम्न जातीय आंधालों के सराठा प्रणेता **ज्योतिबा फुले** ने अपनी **शुद्धाभिप्रेति (1870)** में जाति प्रथा के अत्याचारों पर लिखा।
- बीसवीं सदी के महाराष्ट्र में **भीमराव अंबेडकर** और महाराष्ट्र में **इ. जी. रामास्वामी नायकर** ने जो परिवार के नाम से बेदखल होने लगे हैं, जाति पर जोरदार कलम चलाई और उनके लेखन पूरे भारत में पढ़े गए।
- कानपुर के मिल मजदूर **काशीबाबा** ने 1938 में **होटे और बड़े का भवाल** लिख और छाप कर जातीय एवं वर्गीय शोषण के बीच का रिश्ता समझाने की कोशिश की।
- बंगाल के मूल मिल-मजदूरों ने श्रम को विशिष्ट करने के अर्थाल से



अन्तर्गत बनाए। जिसकी प्रेरणा उन्हें लॉर्ड के मिल-भजद्वारे से मिली थी। उनकी मूल कोशिस यह थी कि मजदूरों के बीच नशाखोरी फर हो, भादरता अरु, और उन तक राष्ट्रवाद का संदेश भी अध्यासभव पहुँचे।

### प्रिंट और प्रतिबंध :-

- 1798 के पहले तक अनिवेशी शासक संसद को लेकर बहुत गंभीर नहीं थे। शुरू में जो भी थोड़े बहुत नियंत्रण लगाये जाते थे वे भारत में रहने वाले ऐसे अंग्रेजों पर लगाये जाते थे जो कम्पनी के कुशासन की आलोचना करते थे।
- 1857 के विद्रोह के बाद प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति अंग्रेजी हुकूमत का रवैया बदलने लगा।
- वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को 1878 में पारित किया गया।
- इस कानून ने सरकार को वर्नाकुलर प्रेस में समाचार और संपादकीय पर संसद लगाने के लिए अकूत शक्ति प्रदान की।
- राजशेही रिपोर्ट देने पर अखबार को चेतावनी दी जाती थी। यदि उस चेतावनी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था तो फिर ऐसी भी संभावना होती थी कि प्रेस को बन्द कर दिया जाये और प्रिंटिंग मशीनों को जल कर दिया जाये।